3. कित्ता।

4. कित्ता पे. 170.

5. शेख इजाज़, (2009) *सूफी संप्रदाय (दर्शनः धार्मिक और सामाजिक)* चिन्मय प्रकाशन, औरंगाबाद, प्रथम संस्करण, पृ. 270.

6. शेनोलिकर एच. एस., और देशपांडे क्यू. एन., (1972) *महाराष्ट्र संस्कृति निर्माण और विकास,* मोघे प्रकाशन, प्रथम संस्करण, कोल्हापुर, पृ. 206.

7. सरदेसाई जी. एस., (1993) *मुस्लिम रियासत (खंड–1) सुल्तान घरानी (1526 ई. तक)* संपादक– गार्ज, एस. माननीय. लोकप्रिय प्रकाशन, प्रा. लिमिटेड पाँचवाँ संस्करण, मुंबई, पृ. 25.

8. काले भगवान, (सं.), (1986) *मराठवाड़ा कल और आज* (पहला भाग) संकेत प्रकाशन, प्रथम संस्करण, जालना, पृ. 79.

9. कुंटे बी. सी., (संपादक), (1966) *बहामनी साम्राज्य का इतिहास,* मैजेस्टिक बुक स्टॉल, बॉम्बे, प्रथम संस्करण, पीपी. 4, 8.

10. भावे वा. क्र., (1998) *महाराष्ट्र का सामाजिक इतिहास 'पूर्व–मुस्लिम महाराष्ट्र',* वरदा प्रकाशन, दूसरा संस्करण, (खंडकृ1) भागकृ1, पुणे, पृ. 206.

11. मोरावंचिकर रेस. (संपादक), (2009) *द मेकिंग ऑफ मॉडर्न महाराष्ट्र,* शिल्पकार जीवनी, खंड ५, साप्ताहिक विवेक (संपादक श्री. मोरवंचिकर) (हिंदुस्थान पब्लिशिंग हाउस) मुंबई, 2009. पीपी. 69.

12. डब्ल्यू. क्र. भावे, उपरोक्त, पृ. 207.

13. पानसे मु. सी., (1963) *यादव काल के दौरान महाराष्ट्र, (1000 से 1350 ई.)* मराठी ग्रंथों का बॉम्बे संग्रहालय, प्रथम संस्करण, मुंबई, पीपी 291.

14. पाठक अरुणचंद्र, (सं.), (2002) *इतिहासः प्राचीन काल, महाराष्ट्र राज्य गझेटियर,* मुंबई, प्रथम संस्करण, (खंडकृ1) भाग–1, 2, मुंबई. पृ. 116.

——==00==——

में पारंगत विद्वान थे। अग्रहारों की रचना ऐसी थी कि वह वैदिक अध्ययन के लिए उपयोगी होगी। अग्रहार के मध्य में एक मंदिर, एक पाठशाला, एक भोजनशाला थी और उसके चारों ओर ब्राह्मणों के निवास स्थान थे। इसी प्रकार के अग्रहार मध्य युग में उभरे।

मंदिर वह स्थान है जहां लोग देवी–देवताओं को मूर्तियों या छवियों के रूप में देख सकते हैं। भारत में मंदिर हिंदू संस्कृति के केंद्र बने रहे। एक विशेष संप्रदाय के लोग देवी–देवताओं की पूजा–अर्चना के लिए अपनी सुविधा के अनुसार पुजारी नियुक्त करते थे। आमतौर पर गुरुवा शिव मंदिर में, भांग सूर्य मंदिर में और भागवत विष्णु मंदिर में पुजारी का काम करते थे। इस आय से मंदिर से जुड़े समाज के एक वर्ग का जीवन चलता था।[13] इससे प्रतीत होता है कि उस समय मंदिर एक संस्था थी। हिंदू धर्म में मध्य युग में भी शिक्षा मंदिर के केंद्र से ही दी जाती थी। लोग मंदिर के माध्यम से धारणा, ध्यान, जप, मौन, आसन, प्राणायाम करते थे। ये अग्रहार और मंदिर शिक्षा, कला, कौशल, धर्म और संस्कृति के पवित्र केंद्र थे। धार्मिक कार्यों के अलावा उस समय का मंदिर शैक्षिक कार्यों और शिक्षा के प्रसार में भी बहुत सक्रिय था। पहले मंदिर से जुड़े स्कूल थे। इस विद्यालय से पढ़ने वाले विद्यार्थियों को मंदिर की छत्रछाया से मीमांसा, ज्योतिष, व्याकरण आदि विषयों की शिक्षा दी जाती थी। इस धार्मिक शिक्षा के अलावा अन्य विषय भी पढ़ाए जाते थे।14 मंदिर का मुख्य पुजारी मंदिर का प्रबंधन देखता था। नगर या गाँव का वह भाग जहाँ ब्राह्मण रहते थे, ब्रह्मपुरी कहलाता था। यह शहर या गाँव का एक अभिन्न अंग था। उस क्षेत्र में केवल ब्राह्मण रहते थे। वे पूजा–पाठ, योग, समाधि में निपुण थे। एक विद्यार्थी शिक्षा के लिए एक ब्राह्मण के घर रहता था। इस स्थान पर विद्यार्थियों को विभिन्न विषयों का ज्ञान दिया जाता है। इसमें वेद, मीमांसा, षडदर्शन, स्मृतिग्रंथ, पुराण, काव्य, नाटक आदि विषय सम्मिलित थे। बहामनी काल के दौरान महाराष्ट्र में हिंदू समाज को विभिन्न सामाजिक संस्थाओं के माध्यम से शिक्षा प्रदान की जाती थी।

निष्कर्ष

मध्यकाल के दौरान दक्षिण भारत के इतिहास में बहामनी काल एक विशिष्ट और सुसंगत ऐतिहासिक काल है। यह काल भारत में हिन्दू एवं मुस्लिम संस्कृति के समन्वय का काल माना जाता है। बहामनी काल की शिक्षा व्यवस्था के सटीक स्वरूप की जानकारी उस समय के अग्रहारों, मंदिरों, मठों, ब्रह्मपुरी, मस्जिदों, मकतबों, मदरसों द्वारा संचालित अध्ययन एवं अध्यापन से ही प्राप्त की जा सकती है। बहामनी काल के दौरान, महाराष्ट्र में विभिन्न शैक्षिक केंद्र और विशेष स्थान थे जहाँ अध्ययन पढ़ाया जाता था। मध्ययुगीन भारत में शिक्षा का उद्देश्य ज्ञान प्राप्त करना, आध्यात्मिक सुख प्राप्त करना और सामाजिक–आर्थिक स्थितियों में सुधार करना था। बहामनी काल के महाराष्ट्र में शिक्षा कुछ वर्गों तक ही सीमित थी। हिंदू धर्म में ब्राह्मण वर्ग विशेष रूप से प्रबल था। महाराष्ट्र में बहामनी काल में रक्षा और राष्ट्र रक्षा व्यक्ति और समाज की प्राथमिक आवश्यकता थी इसलिए, मार्शल आर्ट और सैन्य शिक्षा को प्राथमिकता दी गई। सैन्य शिक्षा को मार्शल आर्ट के समान ही महत्वपूर्ण माना जाता था। बहामनी काल के दौरान, महाराष्ट्र में हिंदू मुस्लिम समाज में धार्मिक शिक्षा प्रचलित थी। बहामनी काल के दौरान, गुलबर्गा और बीदर को केंद्र के रूप में विकसित किया गया था शिक्षा। सुल्तान इसी मस्जिद से मुस्लिम समुदाय को धार्मिक शिक्षा भी देते थे। मस्जिद के शिक्षक फारसी और अरबी भाषा में पढ़ाते थे। सूफी संत का निवास स्थान खानकाह है। सूफी संतों की शिक्षा इन्हीं खानकाहों से होती थी। धर्म, भाषा, रीति–रिवाज, धार्मिक रीति–रिवाज, परंपरा और संस्कृति के माध्यम से आगे बढ़ते रहे हैं।

संदर्भ सूची

1. अग्निहोत्री ए. एच., (1977) *महाराष्ट्र संस्कृति दार्शनिक संस्थान,* सुविचार प्रकाशन मंडल, प्रथम संस्करण, नागपुर और पुणे, पृ. 147.
2. रोडे सोमनाथ, (1997) *द पॉलिटिक्स ऑफ मिडीवल इंडिया और एस सांस्कृतिक इतिहास, (1000 ई. से 1707 ई.)* पिम्पलापुरे एंड कंपनी पब्लिशर्स, नागपुर, प्रथम संस्करण, पृ. 155.

लगे।[6] मुस्लिम समाज में फ़ारसी और अरबी भाषाएँ मुफ़्त में सीखी जा सकती थीं। मुस्लिम जाति के विद्वान लेखकों, कवियों को राज्य में अच्छा राजकीय आश्रय प्राप्त था।[7] बहामनी राजाओं द्वारा निर्मित शैक्षणिक भवन देखने योग्य हैं। गुलबर्गा और बीदर उनकी राजधानी थीं। बीदर की पाठशाला उल्लेखनीय थी।8 यद्यपि इसमें सभी लोगों को शिक्षा प्राप्त करने की सुविधा नहीं थी, फिर भी प्रत्येक गाँव में मुसलमानों को शिक्षा देने की व्यवस्था की गई थी। गुलबर्गा, बीदर को बहामनी काल के दौरान शिक्षा के केंद्र के रूप में विकसित किया गया था। साथ ही, यह भी नहीं पाया गया कि हिंदुओं को शिक्षा प्रदान करने के लिए कोई विशेष प्रयास किया गया हो। हिंदू अपनी शिक्षा पारंपरिक अग्रहारों, मंदिरों, ब्रह्मपुरी से प्राप्त करते थे, जबकि मुसलमान मस्जिद, खानकाह कॉलेज से पढ़ते थे। बहामनी कालीन महाराष्ट्र में मराठी, फ़ारसी, उर्दू, संस्कृत, अरबी भाषाएँ विशेष महत्वपूर्ण थीं और इनके माध्यम से शिक्षा की सुविधा होती थी।

मस्जिद

बहामनी युग के दौरान गांवों में शिक्षा के लिए मस्जिदों का निर्माण किया गया था और बहामनी सुल्तान इसी मस्जिद से मुस्लिम समुदाय को धार्मिक शिक्षा देते थे। मस्जिद में शिक्षक फ़ारसी और अरबी भाषा में पढ़ाते थे। इस मस्जिद में सुबह स्कूल लगता था। स्कूल के पाठ्यक्रम में कुरान की आयतें पढ़ना शामिल था। बड़े शहरों से पाठशालाएँ चलाई जाती थीं और उनमें मुल्लाओं को नियुक्त किया जाता था।[9] बहामनी काल में मस्जिदों में हिंदुओं को जाने की अनुमति नहीं थी। बहामनी सुल्तान ने गाँवों में ऐसी मस्जिदें बनाने की पहल की। महमदशाह बहामनी द्वितीय के शासनकाल के दौरान, यह देखा गया है कि महाराष्ट्र और बहामनी साम्राज्य के स्थानों में बड़े पैमाने पर मस्जिदों का निर्माण किया गया था। महाराष्ट्र के मुसलमानों की शिक्षा के लिए बहामनी काल के दौरान कमोबेश मस्जिदों का निर्माण किया गया था।

खानकाह

खानकाह एक सूफी संत का निवास स्थान है। सूफी संत की शिक्षा–दीक्षा इसी खानकाह से हुई थी। महाराष्ट्र में कंधार जिला. नांदेड़ में खानकाहें और कई मस्जिदें पाई जाती हैं। इसके अलावा मुस्लिमों की आमद के कारण नांदेड़ दक्षिण में राजनीतिक गतिविधियों का एक प्रमुख केंद्र बन गया।[10] मुहम्मद ग्वान के शासनकाल के दौरान नांदेड़ में सूफी संतों के लिए खानकाह और मस्जिदें बनाई गईं। बीदर में सूफी खानकाह भी प्रसिद्ध है। बीदर किले में सूफी संत की चार खा निकाह के माध्यम से शिक्षा दी जाती थी। खानकाहों में सूफी शिष्यों के साथ–साथ उच्च वर्ग के लोग भी शिक्षा ग्रहण करते थे। ऐसा प्रतीत होता है कि बहामनी सल्तनत ने सूफ़ी शिक्षा के लिए विशेष प्रावधान किये थे।

कॉलेज

भारत के अन्य हिस्सों की तरह, महाराष्ट्र में भी उच्च शिक्षा की परंपराएँ जारी रहीं। यह शिक्षा उच्च शिक्षा विद्यालयों तथा निजी तौर पर दो प्रकार से दी जाती थी। इस तीर्थ स्थान पर पाठशाला हुआ करती थी। मुहम्मद गवान स्वयं एक विद्वान थे। वह एक महान कवि थे. बीदर स्थित उनके निजी पुस्तकालय में तीन हजार से अधिक पुस्तकें थीं। वह गणित और अन्य विज्ञानों में भी कुशल थे। चिकित्सा के क्षेत्र में इसकी अच्छी गति थी। उन्होंने बीदर में एक कॉलेज खोला।[11] उन्होंने गरीब छात्रों की मदद की। वे सुबह–शाम कॉलेज के विद्वानों से चर्चा किया करते थे। उन्होंने दो पुस्तकें श्रौजात–उल–इंशाश और श्दीवान–ए–अशराश लिखीं। मुहम्मद गवान के दरबार में एक विद्वान और कवि होने के नाते, उन्होंने अपने वज़ीरशिप के दौरान कला को संरक्षण दिया। आदर्श रूप से कई विद्वान अपने पदों पर बने रहते हैं। बीदर में एक कॉलेज की स्थापना की गई। उनके समय में साहित्य का क्षेत्र भी जुड़ा।

अग्रहार, मंदिर और ब्रह्मपुरी

अग्रहार, मंदिर, मठ और ब्रह्मपुरी प्राचीन काल से ही ज्ञान प्रसार के केंद्र थे। ऐसा प्रतीत होता है कि एक समय में संपूर्ण भारतीय महाद्वीप में अग्रहारा चयनित स्थानों पर राजा की सहायता से स्वतंत्र रूप से कार्य करता था।[12] बहामनी काल के दौरान, सुल्तान एक विद्वान ब्राह्मण को उसके जीवन–निर्वाह के लिए एक गाँव का पुरस्कार देते थे। ऐसे गाँवों को 'अग्रहार गाँव' कहा जाता है। अग्रहार गाँव में रहने वाले ब्राह्मण स्वयं चरित्रवान और धर्मशास्त्र

व्यावहारिक शिक्षा

व्यावहारिक शिक्षा के दो भाग हैं। (1) प्राथमिक शिक्षा, (2) उच्च शिक्षा। प्राथमिक शिक्षा में जो शिक्षा दी जाती थी वह छात्रों को बुनियादी व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करने के उद्देश्य से दी जाती थी। इसमें पढ़ने, लिखने और सुनाने की पद्धति का प्रयोग किया गया। शिक्षा का प्रारम्भ ''श्रीगणेशाय नमः'' अक्षर से होता था। इसके बाद मुलाक्षरा और बाराखड़ी की शुरुआत हुई। इस काल में महाराष्ट्र के विद्यार्थियों ने प्राथमिक शिक्षा में अत्यंत महत्वपूर्ण लिपि सीखी और दिया गया. इसमें पढ़ने–लिखने पर जोर दिया गया।[4] क्योंकि ऐसा देखा गया है कि उस समय के आम लोग अपने पत्र–व्यवहार में मोदी लिपि का प्रयोग करते थे। लोगों के बीच टेढ़ी–मेढ़ी मोदी लिपि को पढ़ना एक लोकप्रिय प्रथा थी। विषय और सामग्री पर अधिक ध्यान न देकर खड़–खड़ पढ़ने पर जोर दिया गया। चल रहे मोदी पत्रों की व्याख्या करना कठिन था। इसके लिए बहुत अभ्यास की आवश्यकता थी। इस काल में प्राथमिक शिक्षा की भाँति उच्च शिक्षा भी प्रदान की जाती थी। उच्च शिक्षा स्कूलों और निजी तौर पर आयोजित की जाती थी। तीर्थस्थलों पर पाठशालाएँ होती थीं। ऐसे शिक्षा केंद्र महाराष्ट्र में पैठण, नासिक, कोल्हापुर, दौलताबाद आदि में स्थित थे।

धार्मिक शिक्षा

महाराष्ट्र में बहामनी काल के दौरान हिंदू–मुस्लिम समुदाय में बड़ी मात्रा में धार्मिक शिक्षा का प्रचलन था। कथा कीर्तन के माध्यम से आम लोगों को ज्ञान प्राप्त करने का अवसर मिलता था। कथा गाने वाले पुराणिक और हरदास गाँव–गाँव जाकर पौराणिक कहानियाँ सुनाते थे। श्रावण मास में प्रत्येक गाँव में एक धार्मिक पुस्तक का सामूहिक पाठ होता था। इसके अलावा छत्रकथा का एक अलग वर्ग सामाजिक शिक्षा का कार्य करता हुआ प्रतीत होता है। बहामनी काल में चित्रक पद पर आसीन व्यक्ति के पास रामायण, महाभारत, हरिवंश, पांडवप्रताप आदि ग्रंथों की महत्वपूर्ण घटनाओं के चित्र हुआ करते थे। इस चित्र की सहायता से वे संबंधित पुस्तक की विषय–वस्तु को समझाते थे। इसके अलावा पोतराज, भूटे, भोपे, वासुदेव जैसे लोग विभिन्न प्रकार से जनजागरण का कार्य करते थे। हिंदू समाज की तरह बहामनी काल में भी कुरान और हदीस जैसी धार्मिक शिक्षा बड़े पैमाने पर दी जाती थी। कुरान की आयतों का पाठ, ध्यान और चिंतन के माध्यम से कुरान का पाठ। साथ ही धार्मिक शिक्षा में धार्मिक कार्य अनुष्ठानों को उचित प्रकार से करने की विधि भी सिखाई जाती थी। मुस्लिम धार्मिक परंपरा के अनुसार अनुष्ठान करने की शिक्षा दी गई।

व्यावसायिक शिक्षा

ऐसा प्रतीत होता है कि मराठा राज्य में व्यावसायिक शिक्षा प्रदान करने वाला कोई संस्थान या स्कूल नहीं है। इस शिक्षा की जिम्मेदारी संबंधित बच्चों के परिवारों पर थी। पिता अपने पुत्र को अपने व्यापार के कौशल सिखाता था। प्रत्येक जाति का एक निश्चित व्यवसाय था। बालक बचपन से ही अपने परिवार के बड़ों को व्यवसाय में मदद करने लगा। इसलिए, उन्हें छोटी उम्र से ही उस व्यवसाय का स्वाद मिल गया। चूँकि प्रत्येक जाति का एक निश्चित व्यवसाय होता था, इसलिए परिवार का मुखिया अपने बच्चों को उनके पेशे के कौशल और व्यापार सिखाना अपना कर्तव्य समझता था। क्योंकि उसके अलावा बच्चे के पास आजीविका का कोई अन्य साधन नहीं था।

दक्षिण में, सूफी संतों, धर्म पंडितों ने खानकाह शिक्षा प्रणाली के माध्यम से लोगों को प्रबुद्ध किया। समाज में संतत्व और भाईचारे के मूल्यों को स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित किया गया। इससे समाज में मानवता को महत्व मिला।[5] इसी स्थान पर खानकाह गुलबर्गा मौजूद है। इसके अलावा, बहामनी साम्राज्य में सैन्य और धार्मिक शिक्षा को विशेष महत्व मिला, जहाँ मुस्लिम शिक्षा दौलताबाद बीदर में खानकाह से की जाती थी। अरबी, उर्दू भाषा में शिक्षा की सुविधा उपलब्ध थी। इसी काल में दक्षिण में उर्दू भाषा का विकास हुआ। साथ ही, बहामनी काल में मस्जिदों के माध्यम से मुल्लाओं के माध्यम से गाँव–गाँव शिक्षा प्राप्त करने की सुविधा विद्यमान थी।

शैक्षिक केन्द्र

बहामनी काल के दौरान ईरान, इराक, अरब और अन्य देशों से आए मुस्लिम समुदाय के लोगों ने सम्माननीय स्थानों पर कब्ज़ा करना शुरू कर दिया। इससे देशी या स्थानीय मुसलमान उनके प्रति शत्रुता की भावना रखने

2. हिंदू शिक्षण संस्थानों में पारंपरिक, धार्मिक विषयों, पारंपरिक धर्मनिरपेक्ष विषयों, शास्त्रों का अध्ययन, मानविकी, संस्कृत और क्षेत्रीय भाषाओं और व्यावसायिक प्रशिक्षण को पाठ्यक्रम में शामिल करना।
3. भारतीय शिक्षा प्रणाली के दूसरे भाग में छंद, निरुक्त, नाटक, काव्य आदि का समावेश।
4. विषय विभाग में तर्कशास्त्र, गणित, चिकित्सा, प्राणीशास्त्र, भूगोल, शरीरक्रिया विज्ञान, भूगोल, खगोल विज्ञान आदि पढ़ाया जा सकता है।
5. भारतीय शिक्षा में मानव विज्ञान जैसे इतिहास, संगीत, मूर्तिकला, वास्तुकला आदि में नए कौशल पैदा करना।

अनुसंधान परिकल्पनाएँ

1. बहामनी युग के दौरान महाराष्ट्र में शिक्षा प्रणाली प्राचीन तत्वों पर आधारित है।
2. बहामनी काल के दौरान महाराष्ट्र में शिक्षा पर जैन, शैव और शाक्त संप्रदायों का प्रभुत्व था।
3. बहामनी काल में महाराष्ट्र में शिक्षा पर मुस्लिम धर्म का प्रभुत्व था।
4. बहामनी साम्राज्य ने सैन्य और धार्मिक शिक्षा पर जोर दिया।

अनुसंधान पद्धति

वर्तमान शोध के लिए बहामनी युग के दौरान महाराष्ट्र में शिक्षा प्रणाली की समीक्षा की गई है और इसके लिए ऐतिहासिक शोध पद्धति का उपयोग किया गया है। सांस्कृतिक परंपराओं का एक संग्रह जो इस अवधि से अभी भी स्थानीय स्तर पर मौजूद है। बहामनी काल के दौरान महाराष्ट्र में शिक्षा प्रणाली के लिए जहां आवश्यक हो वहां तस्वीरें, मानचित्र और चार्ट जोड़े गए हैं। वर्तमान पेपर के लिए सर्वेक्षण विधियों, प्रत्यक्ष अवलोकन, प्रश्नावली, साक्षात्कार और संदर्भ अनुसंधान विधियों का उपयोग किया गया है। साथ ही, वर्तमान लेखन के लिए उपलब्ध दृश्य सामग्री और भौतिक साक्ष्य का भी मूल्यांकन किया गया है। इसके अलावा इसके ऐतिहासिक अध्ययन के लिए प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है।

बहामनी काल के दौरान महाराष्ट्र में शिक्षा की प्रकृति

कुश्ती

बहामनी काल के दौरान महाराष्ट्र में रक्षा और राष्ट्रीय रक्षा व्यक्ति और समाज की प्राथमिक ज़रूरतें थीं। अतः कुश्ती एवं सैन्य शिक्षा को प्राथमिकता दी गई। व्यावसायिक शिक्षा, धार्मिक शिक्षा और सैन्य शिक्षा के साथ–साथ व्यावहारिक शिक्षा भी दी जाती थी।[1] चूँकि एक सामान्य संकेत था कि हर किसी को एक मजबूत शरीर प्राप्त करना चाहिए, इसलिए शारीरिक फिटनेस पर सचेत ध्यान दिया जाता था। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि अमीर से लेकर आम आदमी तक हर कोई कुश्ती और सैन्य शिक्षा की ओर आकर्षित है। कुश्ती में जोर लगाना, बैठना, कुश्ती करना, वजन उठाना आदि शामिल हैं।[2] कुश्ती की यह शिक्षा प्राप्त करना बहुत आसान है। इसके लिए गांव–गांव में छोटे–बड़े प्रशिक्षण आयोजित किये गये। इस तरह के अखाड़े में युवा सुबह व्यायाम करते थे और एक–दूसरे को रणनीति सिखाते थे। इनमें से जो सबसे अच्छा मल्ल था, उसे ग्रामीण के माध्यम से खुराक दी जाती थी। इसी अखाड़े से युवाओं को शारीरिक शिक्षा के अलावा ग्राम रक्षा की भी शिक्षा दी जाती थी।

सैन्य शिक्षा

सैन्य प्रशिक्षण कुश्ती की तरह ही आजीविका का महत्वपूर्ण साधन था। बहामनी काल के दौरान, सैन्य प्रशिक्षण में दंडपट्ट खेलना, बंदूकें, भाले और तीर चलाना शामिल था। घोड़े की सवारी करना और भाला फेंकना उच्च वर्गों की खासियत थी। लेकिन प्रत्येक व्यक्ति निजी तौर पर अधिक से अधिक सैन्य शिक्षा प्राप्त करना चाहता था। सरदार अपने पुत्रों को घोड़े पर बैठाकर युद्ध का प्रदर्शन करते थे। युद्धक्षेत्र वह पाठशाला थी जहाँ महान युद्ध लड़े जाते थे और वहाँ भविष्य के नायकों के अंतर्निहित गुण सामने आते थे।[3]

AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

बहामनी काल के दौरान महाराष्ट्र में शिक्षा प्रणाली का एक अध्ययन

ORIGINAL ARTICLE

Author
डॉ. मोतीराज रामदास चव्हाण
इतिहास विभाग प्रमुख
भिवापुर कॉलेज
भिवापुर, जिला नागपुर, महाराष्ट्र, भारत

शोध सार

महाराष्ट्र में विभिन्न शैक्षिक केंद्र और विशेष स्थान थे जहाँ पढ़ाया जाता था। मध्ययुगीन भारत में शिक्षा का उद्देश्य ज्ञान प्राप्त करना, आध्यात्मिक सुख प्राप्त करना और सामाजिक–आर्थिक स्थितियों में सुधार करना था। बहामनी काल के महाराष्ट्र में शिक्षा कुछ वर्गों तक ही सीमित थी। हिंदू धर्म में ब्राह्मण वर्ग विशेष रूप से प्रबल था। महाराष्ट्र में बहामनी काल में रक्षा और राष्ट्र रक्षा व्यक्ति और समाज की प्राथमिक आवश्यकता थी। आज की शिक्षा व्यवस्था का जो स्वरूप है वह अतीत में नहीं था। पहले शिक्षकों को प्रशिक्षित करने के लिए अब की तरह प्रशिक्षण केंद्र नहीं थे। अतः उस समय की शिक्षा व्यवस्था के सटीक स्वरूप की जानकारी उस समय के अग्रहारों, मंदिरों, मठों, ब्रह्मपुरी, मस्जिदों, मकतबों, मदरसों में होने वाले अध्ययन–अध्यापन से ही प्राप्त हो सकती है। इस शोध विधि के माध्यम से बहामनी कालखंड के दौरान शैक्षिक गतिविधियों का अध्ययन किया जायेगा।

मुख्य शब्द

बहामनी, कालखंड, शैक्षिक केंद्र, शैव, अग्रहार, मंदिर.

परिचय

बहामनी काल के दौरान, महाराष्ट्र में विभिन्न शैक्षिक केंद्र और विशेष स्थान थे जहाँ पढ़ाया जाता था। बहामनी कालीन महाराष्ट्र में शिक्षा केवल कुछ कक्षाओं तक ही सीमित थी। हिंदू धर्म में ब्राह्मण वर्ग विशेष रूप से प्रभावशाली था। सामूहिक शिक्षा के सिद्धांत का अत्यंत अभाव था। कभी–कभी सरकार स्थानीय पाठशालाओं को इनाम के रूप में ज़मीन भी देती थी। ऐसे विद्यालय किसी मंदिर या पेड़ के नीचे आयोजित किये जाते थे। ऐसे विद्यालयों में शिक्षक ब्राह्मण होते थे। वे शिक्षा का कार्य करते थे। वे बिना वेतन के काम करते थे। उनकी आजीविका ग्रामीण ही चलाते थे। प्राथमिक शिक्षा में पढ़ने, लिखने और सुनाने पर जोर दिया जाता था। साथ ही व्याकरण, तर्कशास्त्र आदि विषय भी साथ ही पढ़ाये जाते थे। ऐसे बहुत कम दस्तावेज़ हैं जो शिक्षा प्रणाली के बारे में जानकारी प्रदान करते हैं। इस काल में महाराष्ट्र में विशेषकर हिंदू मुस्लिम समुदाय में कुश्ती, सैन्य शिक्षा, व्यावहारिक शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा, धार्मिक शिक्षा और सैन्य शिक्षा दी जाती थी।

अनुसंधान के उद्देश्य

1. मध्यकालीन भारत में ज्ञान प्राप्ति, आध्यात्मिक सुख की प्राप्ति और सामाजिक–आर्थिक स्थितियों में सुधार।